

NEO CONVENT SR. SEC. SCHOOL
PASCHIM VIHAR -63

SPECTRUM 2023-24

NEW YEAR
HOPE'S

INDIA 2024

117TH EDITION
DECEMBER-FEBRUARY

DESIGNED BY - MANKIRAT KAUR XI-B

SPECTRUM
Of the Neonians!
By the Neonians!
For the Neonians!



New Year, New Hopes and New Beginnings

"The New session is like a painting not yet painted; a path not yet stepped on and a wing not yet taken off."

As 2024 started, some may have felt a sense of happiness. However, people all over the world celebrated the New Year in their unique way, making promises for the upcoming start of the new session, the new class. The New session is like a beacon of hope, serving as a guiding light and paving us a way to make a step ahead towards our career. Those who hold onto hope no matter how challenging life is, they can confidently navigate through its obstacles and they might top in their new class.

As the new session commences, it is an opportunity for us to make changes in our lives, embark on new paths, try new things, and bid farewell to old habits, problems, and most importantly start a new session with keeping the door open to opportunities. We should start studying with dedication and motivation. After all, motivation and hard work go hand in hand.

Often, we start making new plans and new resolutions. We might feel elated, inspired, and hopeful, but sometimes we also feel a little apprehensive. Hillary De Piano rightly said "We all get the same 365 days. The only difference is what we do with them." Therefore, we should remain motivated to make our new session more productive and remember that the new session is a time for us to make a step ahead towards our career.

Hope is like a walking dream and no matter how difficult the journey of life may be, we can easily navigate through life's challenges. So, we should try to remain motivated so that we can make our new year more productive. Always remember that the start of a new session represents fresh starts, hope and new opportunities.

GAGANPREET KAUR IX-C

STUDENT FACILITATORS



Sanpreet Kaur (XIB)



Mankirat Kaur (XIB)



Jasleen Kaur (XIB)

TEACHER FACILITATORS

*Mrs. Kanchan Bhagat, Mrs. Santosh,
Mrs. Surbhi Hajela, Mrs. Geetika Manchanda,
Ms. Surbhi Taneja, Mr. Mayank Grover*

KUDOS TO NEONIANS



**SIFAT KAUR (V-B)
AND BIPRAN SINGH(II-A)**



**DIVYANSH BANSAL
VI-B**



**ANANYA PATI
VIII-A**



**AAKRISH
SAINI VII-A**



**HARSHIT
IX-B**



**HAR ROOP
SINGH VII-C**



**BAVNEET
SINGH GILL VII-C**

ABACUS CHAMPIONS

CHANDRASEKHAR SANKURATHRI

Chandrasekhar Sankurathri was born in Andhra Pradesh to Naidu Sankurathri and Ramayamma on 20th November 1943. He attended Municipal high school at Rajahmundry and Memorial University of Newfoundland in Canada. He worked as a scientific evaluator with Health Canada in Ottawa and also as a visiting scientist for the Ministry of fisheries in Canada.

He established Sarada Vidyayalam in 1992 on his daughter's name which is a high school to provide free education for rural poor children. Till October 2019, this foundation restored vision to more than 2.7 lakh people among needy and poor. Even the eyes of the economically backward and weaker sections were treated through Sarada Vidyayalam.

He also educated more than 3,000 rural poor children and provided them with many free facilities.

The Sarada Vidyayalam consists of 3 schools- primary, high and vocational. As stated, it has been started in 1992 and by September 2008, more than 1,200 students had graduated. It also promised to provide job skills to unemployed youth. The surprising thing is that the school claims a zero drop-out rate in a scenario where national average of drop-out rate is 50 percent. The students here are also taught how to draw, paint, sew, do embroidery, yoga, dance, drama and crafts. The children here also receive lunch, milk, shoes, uniforms, school bags, medical check-ups and so on.

Today, Sankurathri provides affordable eye care to all regardless of their socio-economic status. He even provides free cataract operations, free medications, free surgery and food while the patients are in the hospital built by him. And the cherry on the cake is that he has done more than 137,000 cataract operations till now. Mr. Sankurathri has also released his autobiography known as 'A Ray of Hope' to help youngsters to cope with depression which is a major problem now-a-days.

He had taught an amazing lesson that- 'None of us are capable of losing everything we love and then taking it as an opportunity to serve others.'

HAPPY 75th REPUBLIC DAY



नई खिलती पहचान

ना कर मुझे अलग
मैं भी प्रकृति का एक हिस्सा हूँ
मत घूर मुझे ऐसे,
जैसे मैं किसी बेकार सी कहानी का हिस्सा हूँ
जितना तू या जितनी तू समझदार है,
उतना मैं भी हकदार हूँ
आज तू इस धरती की शान है,
पर भविष्य में यह लिख ले
कि मेरा भी हर जगह मान है।
जब तक ये लड़की, लड़का और मेरा अंतर नहीं मिटेगा
तब तक तरक्की की इस सीढ़ी का तिरंगा कैसे
फिरेगा।
तो आओ इस जिंदगी में शुरुआत
हम अपने आप से करें
थोड़ा तुम शुरू करो, थोड़ा हम शुरू करें।

गीतिका
(अध्यापिका)

EXCURSIONS



PATH TO SUCCESS

*Till now my dreams have not come true,
That's why, I am working to find a road a new.*

*My soul and my heart say,
One day, I will achieve success
That's all what I pray for,
And to be determined myself.
Struggling along the hard ways,
Not caring what others say
I have a hope within me,
That sooner or Later I'll be
successful surely,
All what I have to remember
is not to make a mess
This is what I have to follow,
This is the Path to Success.*

-Bhawna VIII C

SUCCESS

HEROES OF INDIA

*In the tapestry of time, heroes concealed,
Bhagat Singh's courage, a flame so bright,
Rani Lakshami Bai, till the death she fights,
The unsung heroes shine like stars in the night.*

*Silent the heroes, their tales speak loud,
Fought the enemies and made us proud,
Samrat Prithviraj fought the invaders,
Subhash Chandra Bose against those,
who came as traders.*

*In the tapestry of time, heroes concealed,
Legends untold, their patriotism uncontrolled,
As the wheel of time turns, their name may fade,
But their spirits and sacrifice, shall never evade.*

-Aarav Garg IX-C

भगवान विष्णु जी के दस अवतार

भगवान विष्णु जी के दस अवतारों में अब तक हमने मत्स्य अवतार, कच्छप अवतार, वराह अवतार, नरसिंह भगवान और वामन अवतार के बारे में जानकारी प्राप्त की कि किस तरह उन्होंने अवतार लेकर बुराई का अंत किया।

आज हम भगवान विष्णु जी के सातवें अवतार के बारे में पढ़ेंगे। सातवाँ अवतार अर्थात् भगवान राम का मुख्य अवतार है।

राम अवतार में भगवान विष्णु ने समस्त लोकों को मित्रता और मर्यादा में रहने का संदेश दिया। राम अवतार में भगवान को मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से जाना गया। कथा के अनुसार त्रेता युग में राक्षसराज रावण के आतंक और अत्याचारों से तीनों लोकों में हाहाकार मची हुई थी। समस्त देवतागण भी रावण के अत्याचारों से तरस्त थे। पृथ्वी लोक और देवलोक को रावण के अत्याचारों से मुक्त करने के लिए भगवान विष्णु ने राजा दशरथ के यहाँ माता कौशल्या के गर्भ से चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को जन्म लिया था, इसलिए इस दिन को रामनवमी के रूप में मनाया जाता है।

भगवान राम का जन्म त्रेता युग में कौशल नरेश राजा दशरथ के यहाँ हुआ था। राजा दशरथ की तीन रानियाँ थीं— कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा। राजा दशरथ का यश पृथ्वीलोक पर ही नहीं स्वर्गलोक में भी फैला हुआ था। अपार यश व संपन्नता के बाद भी उनके जीवन में संतान—सुख नहीं था। आखिरकार उन्होंने राजगुरु वशिष्ठ जी से अपने मन की बात कही। राजगुरु वशिष्ठ ने उन्हें पुत्रेष्टि—यज्ञ करने की सलाह दी। राजगुरु वशिष्ठ की बात मान कर सरयू नदी के तट पर एक विशाल यज्ञशाला बनवाई गई। यह यज्ञ ऋषि शृंगी की देख-रेख में आयोजित किया गया। शंख—ध्वनियों और मंत्रों के उच्चारण के बीच आहुतियाँ डाली जाने लगी। राजा दशरथ के हाथ से जैसे ही अंतिम आहुति डली, वैसे ही यज्ञ के हवनकुंड से अग्नि देव प्रकट हुए। उनके हाथ में खीर से भरा एक पात्र था। उन्होंने वह पात्र राजा दशरथ को पकड़ाते हुए आशीर्वाद सहित यह कहा कि इसे तुम अपनी रानियों को खिला देना। तुम्हारी मनोकामना अवश्य पूरी होगी। कुछ समय बाद तीनों रानियों के पुत्रों ने जन्म लिया। रानी कौशल्या के राम, रानी कैकेयी के भरत व रानी सुमित्रा के लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न ने जन्म लिया। इस खबर के साथ पूरे अयोध्या में उत्सव का माहौल फैल गया। धीरे-धीरे चारों राजकुमार बड़े होने लगे। उनका शील, सौंदर्य देखकर सब उन पर मोहित हो जाते। चारों भाइयों में आपस में बहुत प्रेम था। राम अपने छोटे भाइयों से बहुत स्नेह करते थे। लक्ष्मण का राम से व शत्रुघ्न का भरत से कुछ विशेष अनुराग था। समय पंख लगाकर उड़ रहा था। राजकुमार जब थोड़े बड़े हो गए तो उन सभी को शिक्षा—दीक्षा के लिए गुरु वशिष्ठ के आश्रम में भेजा गया। गुरु—पत्नी अरुंधती उन पर वात्सल्य लुटाती थी। गुरुकुल में रहकर उन सभी ने शास्त्रों के

अध्ययन के साथ वहाँ के सभी कार्य किए। शीघ्र ही वे सभी विद्याओं में पारंगत हो गए। वे सभी कुशाग्र बुद्धि वाले थे। शिक्षा पूरी करके वे चारों अयोध्या वापिस आ गए। समय बीतता गया। चारों राजकुमार युवा हो गए।

एक दिन राजा दशरथ के दरबार में महर्षि विश्वामित्र आए। वे अपने साथ राम को ले जाना चाहते थे क्योंकि वन में राक्षसों के भय से मुनिगण अपने कार्य नहीं कर पा रहे थे। राम द्वारा उन राक्षसों का वध करवाने के लिए महर्षि विश्वामित्र उन्हें लेने आए थे। लेकिन जब राजा ने उनकी बात सुनी तो वे डर गए। राजा दशरथ को अपने बड़े पुत्र राम से अधिक स्नेह था। गुरु वशिष्ठ के आश्वासन पर राजा राम को उनके साथ भेजने के लिए तैयार हो गए। राम के साथ वन लक्ष्मण भी गए। महर्षि विश्वामित्र ने दोनों भाइयों को कई विद्याएँ सिखाई। राम ने अपने पराक्रम से वन में रहने वाले ऋषि-मुनियों के डर को राक्षसों के वध द्वारा मुक्त किया। महर्षि विश्वामित्र राम से बहुत प्रभावित हुए। वे उन्हें अपने साथ मिथिला ले कर गए। जहाँ मिथिला नरेश अपनी सुपुत्री के स्वयंवर का आयोजन कर रहे थे। स्वयंवर की यह शर्त थी कि जो भगवान शिव के धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ा देगा उसका विवाह सीता से होगा।

राजदरबार में उपस्थित कोई भी राजा उस धनुष को उठा नहीं पाया। तब महर्षि विश्वामित्र के कहने पर राम जैसे ही धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने लगे तब धनुष बीच में से टूट गया। स्वयंवर में विजयी होने पर उनका विवाह सीता के साथ होना तय हुआ। राजा दशरथ को जब स्वयंवर की बात पता चली तो वे बारात लेकर मिथिला आए। जहाँ राम का ही नहीं अपितु उनके तीनों भाइयों का विवाह भी हुआ। भरत का मांडवी से, लक्ष्मण का उर्मिला से व शत्रुघ्न का श्रुतकीर्तिसे हुआ। चारों पुत्र व पुत्रवधुओं को देखकर माताओं व पिता की खुशी का ठिकाना ही नहीं था। ऐसा लग रहा था कि सारे संसार की खुशियाँ मिल गई हो। राम-लक्ष्मण पिता के साथ राज-दरबार के कार्यों में हाथ बँटाने लगे। राम के विनम्र व शालीन व्यवहार के कारण अयोध्या की जनता उन्हें बहुत पसंद करती थी। राजा दशरथ ने अब राम को अपना उत्तराधिकारी बनाने की घोषणा की। यह खबर सुनकर कैकेयी की मुँहलगी दासी मंथरा को बहुत बुरा लगा। उसने कैकेयी के राम के प्रति कान-भर दिए और उसे अपने दो वचनों की याद दिलवाई। कैकेयी ने इन वचनों के द्वारा राम को चौदह वर्ष का वनवास व दूसरे वचन में भरत के लिए राज गद्दी माँगी। राजा दशरथ के प्राण राम में बसते थे। राम वन जा रहे थे तो उनके वियोग में राजा दशरथ ने अपने प्राण त्याग दिए। अयोध्या में जहाँ खुशी का माहौल था वहीं आज मातम छा गया था।

राम जब इधर वन जाने लगे तो उनके साथ सीता व लक्ष्मण भी गए। वन में उनकी कई ऋषियों से मुलाकात हुई। जैसे- अत्रि ऋषि, शरभंग ऋषि, अगस्त्य ऋषि आदि। अयोध्या से निकलने के बाद वे कुछ समय चित्रकूट में रहें। उसके बाद अगस्त्य ऋषि के कहने पर वे तीनों पंचवटी में कुटिया बनाकर रहने लगे। समय बीतता गया। वे तीनों प्रसन्न मन से जीवन का आनंद ले रहे थे कि एक दिन रावण की बहन शूर्पणखा उधर से निकली। राम के सुंदर रूप को देखकर वह मोहित हो गई। उसने राम से विवाह करने की बात की लेकिन राम ने उसे टालकर लक्ष्मण के पास भेज दिया। दोनों भाई उसे टाले जा रहे थे तब उसको गुस्सा आ गया। उसने गुस्से में आकर सीता पर हमला करना चाहा तो लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट दिए। वह रोती हुई रावण के पास

गई और रावण को राम के विरुद्ध भड़काया। रावण क्रोधित हो गया। उसने मारीच की मदद से सीता का हरण किया।

सीताहरण से राम-लक्ष्मण बहुत दुखी हो गए। उन्होंने जंगल-जंगल छान मारा पर सीता न मिली। रावण सीता को हर कर अपनी नगरी लंका में ले गया था। उसने सीता को अशोक वाटिका में रखा था।

सीता को ढूंढते हुए उनकी मुलाकात शबरी से हुई। शबरी ने उन्हें वानरराज सुग्रीव से मिलने को कहा। जब वे सुग्रीव से मिलने ऋष्यमूक पर्वत पर गए तो उनकी मुलाकात हनुमानजी से हुई। हनुमान जी उन्हें सुग्रीव के पास ले गए। वहाँ वे दोनों मित्र बन गए। दोनों ने एक-दूसरे की मदद करने का वचन दिया। राम ने बालि का वध करके अपना वचन निभाया वहीं सुग्रीव ने सीता की खोज में अपनी सारी वानर सेना को लगा दिया।

हनुमान जी ने जब लंका जाकर सीता का पता लगाया और लंका में आग लगाकर रावण को अपनी शक्ति का परिचय दिया। सीता की खबर से सभी खुश हुए। राम जब दक्षिण दिशा में समुद्र के पास आए, तब नल-नील की मदद से समुद्र पर सेतू बना। उस सेतू की मदद से उनकी सेना लंका आ पाई।

राम युद्ध नहीं चाहते थे इसके लिए उन्होंने अंगद को शांति दूत के रूप में भेजा लेकिन रावण को तो अपनी शक्ति पर घमंड था। दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ। अंत में जीत धर्म की हुई। भगवान राम ने रावण का वध कर दिया।

इस युद्ध के साथ ही भगवान के अवतार लेने का उद्देश्य पूरा हुआ।

Hindi is not just a language; it is the soul of our nation, pulsating with history, heritage, and hope. It is a treasure trove of knowledge and emotions, preserving the essence of what it means to be Indian. International Hindi Olympiad 2023. A total of 53 students from classes 9th and 10th participated, out of which 11 students bagged gold medals. The gold winners are as follows:



**SANIYA SHARMA
BANMEET KAUR
ANMOL RAJ
NIRMOLAK SINGH
GARIMA MORYA
OJASVI MAHESHWARI**

**ISHANT GUPTA
PRACHITA YADAV
DRITHI
ANGEL KAUR
TIYA JAGGI**

Special Mention- Prachita Yadav of class 10-C has won National Hindi Talent Award in International Olympiad. She has been bestowed with a gold medal and a trophy.

BIDDING ADIEU



"May you find happiness and success in everything you do. Farewell, my dear students!"

बूझो तो जाने

- कद के छोटे, कर्म के हीन। बीन बजाने के शौकीन.....?
- दिन में सोए, रात में रोए। जितना रोए उतना खोए.....?
- ना कभी किसी से किया झगड़ा, ना कभी करी लड़ाई।
फिर भी होती रोज़ पिटाई.... ?
- पैर नहीं फिर भी चलती है.....?
- सुबह-सुबह ही आता हूँ, दुनियाँ की खबरें लाता हूँ।
सबको रहता मेरा इंतजार, हर कोई करता मुझसे प्यार..?
- घुसा आँख में मेरे धागा, दर्जी के घर से मैं भागा.....?
- सारे जगत की करूँ मैं सैर, धरती पर रखता नहीं पैर।
रात अँधेरी मेरे बगैर, बताओ क्या मेरी पहचान.....?
- पानी में पैदा होता, पानी में मर जाता।
भोजन से तो मेरा गहरा नाता.....?
- एक चीज़ का सस्ता रेट, लंबी गर्दन, मोटा पेट।
पहले खुद का पेट भराए, फिर सबकी प्यास बुझाए...?



WORKSHOPS



स्वप्न कक्ष

किसी शहर में एक परिश्रमी, ईमानदार और सदाचारी लड़का रहता था। माता-पिता, भाई-बहन, मित्र-रिश्तेदार सब उसको बहुत प्यार करते थे। सबकी सहायता को तत्पर रहने के कारण पड़ोसी से लेकर सहकर्मी तक उसका सम्मान करते थे। सब कुछ अच्छा था, किंतु जीवन में वह जिस सफलता प्राप्ति का सपना देखा करता था, वह उससे कोसों दूर था।

वह दिन-रात जी-जान लगाकर मेहनत करता, किंतु असफलता ही उसके हाथ लगती। उसका पूरा जीवन ऐसे ही निकल गया और अंत में जीवनचक्र से निकलकर वह कालचक्र में समा गया। चूंकि उसने जीवन में सुकर्म किए थे, इसलिए उसे स्वर्ग की प्राप्ति हुई। देवदूत उसे लेकर स्वर्ग पहुँचे। स्वर्गलोक का अलौकिक सौंदर्य देख वह मंत्रमुग्ध हो गया और देवदूत से बोला, "ये कौन-सा स्थान है?"

"ये स्वर्गलोक है, तुम्हारे अच्छे कर्म के कारण तुम्हें स्वर्ग में स्थान प्राप्त हुआ है। अब से तुम यहीं रहोगे।" देवदूत ने उत्तर दिया।

यह सुनकर लड़का खुश हो गया। देवदूत ने उसे वह घर दिखाया, जहाँ उसके रहने की व्यवस्था की गई थी। वह एक आलीशान घर था। इतना आलीशान घर उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था। देवदूत उसे घर के भीतर ले गया और एक-एक कर सारे कक्ष दिखाने लगा। सभी कक्ष बहुत सुंदर थे। अंत में वह उसे एक ऐसे कक्ष के पास लेकर गया, जिसके सामने "स्वप्न कक्ष" लिखा हुआ था।

जब वे उस कक्ष के अंदर पहुँचे, तो लड़का यह देखकर दंग रह गया कि वहाँ बहुत सारी वस्तुओं के छोटे-छोटे प्रतिरूप रखे थे। ये वही वस्तुएँ थीं, जिन्हें पाने के लिए उसने आजीवन मेहनत की थी किंतु हासिल नहीं कर पाया था। आलीशान घर, कार, उच्चाधिकारी का पद और ऐसी बहुत-सी चीज़ें, जो उसके सपनों में ही रह गई थीं। वह सोचने लगा कि इन चीज़ों को पाने के सपने मैंने धरतीलोक पर देखे थे, किंतु वहाँ तो ये मुझे मिली नहीं। अब यहाँ इनके छोटे प्रतिरूप इस तरह क्यों रखे हुए हैं? वह अपनी जिज्ञासा पर नियंत्रण नहीं रख पाया और पूछ बैठा, "ये सब.... यहाँ.... इस तरह..... इसके पीछे क्या कारण है?"

देवदूत ने उसे बताया, "मनुष्य अपने जीवन में बहुत से सपने देखता है और उनके पूरा हो जाने की कामना करता है किंतु कुछ ही सपनों के प्रति वह गंभीर होता है और उन्हें पूरा करने का प्रयास करता है। ईश्वर और ब्रह्मांड मनुष्य के हर सपने को पूरा करने की तैयारी करते हैं। लेकिन कई बार असफलता प्राप्ति से हताश होकर और कई बार दृढ़ निश्चय की कमी के कारण मनुष्य उस क्षण प्रयास करना छोड़ देता है, जब उसके सपने पूरे होने वाले ही होते हैं। उसके वही अधूरे सपने यहाँ प्रतिरूप में रखे हुए हैं। तुमने अंत समय तक हार न मानी होती, तो उन्हें अपने जीवन में प्राप्त कर चुके होते। लड़के को अपने जीवन काल में की गई गलती समझ आ गई। परंतु मृत्यु पश्चात अब वह कुछ नहीं कर सकता था।

CAPACITY BUILDING PROGRAMME- GENDER SENSITIVITY



**RESOURCE PERSONS: MS. TANIA JOSHI (THE INDIAN SCHOOL)
AND MS. AISHWARYA TANEJA (BAL BHARTI PUBLIC SCHOOL)**

VEER BAL DIWAS



On Veer Bal Diwas, We bow to Guru Gobind Singh ji's four Sahibjade and Mata Gujri ji. With supreme courage they stood against the brutal Mughal rule and chose martyrdom, refusing to convert. Their unmatched valour will continue to inspire generations to come.

SPIC MACAY & PRIZE DISTRIBUTION



*Lecture Demonstration - Ms. Rani Khanam
Felicitation of Meritorious Students
by
Guest of Honour - Ms. Daljeet Kaur*

NEO CLUBS



READERS' HIVE CLUB



DRAMATICS CLUB



SCIENCE CLUB



COMMERCE CLUB



COMPUTER CLUB



SPIC AND SPAN CLUB



ENVIRONMENTAL CLUB



HERITAGE CLUB